भारवि की भाषाशैली या 'भारवेरर्थगौरवम्'
(STYLISTIC OF BHARAVI OR 'SUPER-SIGNIFICATION OF BHARAVI'

महाकवि भारवि का काव्य 'किरातार्जुनीयम्' अपने अर्थगौरव के लिए विवेचकों में अत्यन्त प्रसिद्ध है। विद्वत्समाज, कालिदास की उपमा के ही समान भारवि के 'अर्थगौरव' का प्रशंसक है—'**भारवेरर्थगौरवम्**' अल्प शब्दों में विशाल अर्थ का सन्निवेश कर देना ही अर्थगौरव की पहचान है। महाकवि भारवि ने अपनी कविता में इसे भली-भाँति दर्शाया है। प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन भी अत्यन्त मनोहारी है। चतुर्थसर्ग का शरद्वर्णन तो संस्कृत साहित्य में बेजोड़ है।

महाकवि भारवि चित्रकाव्य की कला में सिद्धहस्त हैं। चित्रकाव्य का पाण्डित्य प्रदर्शित करते हुए उन्होंने एक सम्पूर्ण सर्ग (पन्द्रहवाँ) ही लिख डाला है; जिसमें सर्वतोभद्र, यमक तथा विलोम के साथ-साथ एकाक्षर-श्लोक भी हैं। एक श्लोक में तो नकार के अतिरिक्त अन्य कोई वर्ण है ही नहीं।[1] चित्रकाव्य तथा श्लेष के कारण यह काव्य इतना क्लिष्ट हो गया है कि मल्लिनाथ ने इस काव्य (किरातार्जुनीयम्) को नारियल-फल के समान बताया है—

"*नारिकेलफलसंनिभं वचो भारवेः* ।" अर्थात् नारियल की भाँति अत्यन्त क्लिष्ट भारवि के पद्यों को विधिवत् तोड़ने के बाद अत्यन्त मधुर व सुस्वादु गिरी (Kernel) की भाँति अर्थगौरव की प्राप्ति होती है।

महाकवि भारवि 'वैदर्भी-रीति' के कवि हैं। इनकी शैली ओजपूर्ण तथा अर्थगाम्भीर्य से युक्त है। इसे अलंकृत कला-पक्ष-प्रधान शैली भी कहा जा सकता है। काव्य को अलंकारों से विशेषरूप से विभूषित करके महाकवि भारवि ने जिस पद्धति को आगे बढ़ाया; उसका परवर्ती कवियों ने खूब जमकर अनुकरण किया। किरातार्जुनीयम् का मूल-कथानक यद्यपि बहुत छोटा है, परन्तु भारवि की शैली के सन्निवेश से उसमें विशेष चमत्कार, कमनीयता तथा व्यापकता का समावेश हो गया है। चतुर्थ सर्ग में शरद्ऋतु का वर्णन है, तो पञ्चम में हिमालय का; अष्टम में गन्धर्वों तथा अप्सराओं के कुसुमावचय का वर्णन है, तो नवम में सन्ध्या, चन्द्रोदय, पानगोष्ठी, रतिक्रीड़ा तथा प्रभात का; दशम सर्ग में षड्ऋतुओं का वर्णन है, तो पन्द्रहवें में चित्रात्मक युद्ध का। इस प्रकार महाकाव्यों के इतिहास में 'अलंकृत-शैली' के उद्भावक के रूप में महाकवि भारवि को बहुत गरिमामय स्थान प्राप्त है।

तात्पर्यमूलक परिष्कृत भाषाशैली के प्रयोगवाद के फलस्वरूप थोड़े शब्दों में विपुल अर्थ की अभिव्यञ्जना इनकी निजी विशेषता है। इसलिए इनकी रचना की समीक्षा करने वाले आचार्यों ने '**भारवेरर्थगौरवम्**' के द्वारा इनके अर्थ गाम्भीर्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। वस्तुतः भारवि ने बड़े से बड़े अर्थ को थोड़े से शब्दों के द्वारा प्रकट करके अपनी अनुपम काव्य-चातुरी दिखायी है। भीम के भाषण की प्रशंसा, युधिष्ठिर के शब्दों में; भारवि की कविता का यथार्थ निदर्शन है—

"*स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम् ।*
रचिता पृथगर्थता गिरां न च सामर्थ्यमपोहितं क्वचित् ॥"

किरातार्जुनीयम् /2/27 ॥

छन्दों के स्वरूप के विषय में भी भारवि उतने ही बढ़े हुए हैं; जितने कि अलंकारों के प्रयोग में। इसमें राजनीति-विषयक वंशस्थ छन्द का प्रयोग भारवि की अन्यतम विशेषता है। भारवि के वंशस्थ की प्रशंसा में स्वयं क्षेमेन्द्र ने लिखा है—

"*वृत्तच्छत्रस्य सा कापि वंशस्थस्य विचित्रता ।*
प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाधिकीकृता ॥"

किरातार्जुनीयम् : एक समीक्षात्मक अध्ययन
(A CRITICAL STUDY OF KIRATARJUNEEYAM)

'किरातार्जुनीयम्' के सम्यगवलोकन से सुस्पष्ट है कि महाकवि भारवि का लोकव्यवहारज्ञान अत्यन्त उच्चकोटि का है। संसार के सुख-दुःख की पहचान इन्हें खूब अच्छी तरह है। साथ-ही-साथ ये अत्यन्त स्वाभिमानी भी प्रतीत होते हैं। द्रौपदी तथा भीम ने अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए, युधिष्ठिर को जिस प्रकार उत्साहित किया है, वह मनन का विषय है।

---

1 "**न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु । नुन्नोऽनुन्नो न नुन्नेनो नानेना नुन्ननुन्ननुत् ॥**"
अर्थात्—अरे! अनेक प्रकार के मुख वाले! निकृष्ट व्यक्ति के द्वारा विद्ध किया गया पुरुष, पुरुष नहीं है और निकृष्ट व्यक्ति को जो विद्ध करता है, वह भी पुरुष नहीं है। स्वामी के अविद्ध होने पर, विद्ध पुरुष भी अविद्ध ही है और अतिशय पीड़ित व्यक्ति को पीड़ा पहुँचाने वाला व्यक्ति निर्दोष नहीं होता।

कवि के स्वभाव में जितना मान का गौरव है, उससे भी कहीं अधिक विनय का महत्त्व है। किरातार्जुनीयम् में जितने भी सम्भाषण मिलते हैं; उनमें कहीं भी शिष्टाचार तथा विनय का उल्लंघन नहीं है। उनके पात्रों में अपने विरोधियों की बातें शान्तचित्त से सुनने की क्षमता है।

भारवि के मत में 'याचना' व्यक्ति का सबसे बड़ा दोष है। इसे वे पण्डितों की मर्यादा का ध्वंसक बताते हैं—"**धिग्विभिन्न-बुधसेतुमर्थिताम्** ।" भारवि इस बात के पोषक हैं कि गुण प्रेम में रहते हैं, वस्तु में नहीं—"**वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि** ।"

जहाँ तक राजनीतिक विषयों का प्रश्न है; किरातार्जुनीयम् को नीतिशास्त्र का विशेषतः राजनीति का आकर-ग्रन्थ कहा जा सकता है। पूरा महाकाव्य लोकनीति एवं शास्त्रनीतिसमन्वित राजनीति से ओत-प्रोत है—"**वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः** ।" "**न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः** ।" "**हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः** ।" "**विश्वासयत्याशु सतां हि योगः** ।" "**सुदुर्लभाः सर्वमनोरमा गिरः** ।" "**गुरुतां नियन्ति हि गुणाः न संहतिः** ।" "**गुणाः प्रियत्वेऽधिकृता न संस्तवः**" **इत्यादि** । भारवि के कुछ वाक्य तो इतने प्रसिद्ध हैं कि सर्वसाधारण व्यक्ति के मुख से भी निकलते हुए सुने जाते हैं।

उपर्युक्त विशेषताओं से युक्त होने के बाद भी महाकवि भारवि ऐसी विकृत-रुचि के भी दोषभागी हैं, जिससे महाकवि कालिदास सर्वथा मुक्त हैं। विशेषतः पन्द्रहवें सर्ग में इन्होंने अत्यन्त मूर्खतापूर्ण ढंग से अत्यधिक श्रमसाध्य चित्रकाव्य की रचना का प्रयत्न किया है; जो अलेक्जेन्ड्रियन (Alexandrian) कवियों की अत्यन्त कृत्रिमता का स्मरण दिलाता है। इनका एक पद्य ऐसा है, जिसकी पहली-तीसरी तथा दूसरी-चौथी पंक्तियाँ समान हैं। एक दूसरे पद्य में चारों चरण समान हैं। एक में लगभग च् और र् का ही प्रयोग किया गया है। दूसरे में केवल स् श् य् और ल् वर्ण ही प्रयुक्त हैं। कुछ अन्य पद्यों में प्रत्येक पंक्ति उल्टी तरफ से ठीक उसी प्रकार पढ़ी जाती है, जैसे आगे वाली पंक्ति, या पूरा पद्य ही उल्टा पढ़ा जाने पर अगले पद्य के समान हो जाता है। एक ऐसा पद्य है, जिसके तीन अर्थ निकलते हैं। दो ऐसे पद्य हैं, जिनमें कोई ओष्ठ्य वर्ण है ही नहीं; परन्तु इन सबके बाद भी अच्छाई यह है कि वे दीर्घ समासों का प्रयोग नहीं करते तथा सम्पूर्ण ग्रन्थ की दृष्टि से उनका काव्य-दुर्बोध भी नहीं है।

व्याकरण के क्षेत्र में महाकवि भारवि अपनी निपुणता प्रदर्शित करने के अनुराग का बहुत अच्छा उदाहरण नहीं प्रस्तुत करते। वे कई प्रकार से उत्तरकालीन कवियों में सधे हुए शब्दों के बार-बार प्रयोग करने के व्यसनी जान पड़ते हैं। तनू धातु का हास्यास्पद रूप में बारम्बार प्रयोग भारवि से ही आरम्भ होता है। इन्हें लिट् लकार का कर्मवाच्य और भाववाच्य प्रयोग बहुत प्रिय है तथा ये कर्मप्रवचीन पूर्व पद समासों (Prepositional Compounds) का क्रिया-विशेषण (Adverb) के रूप में बहुत प्रयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त बहुत कम प्रयुक्त होने वाले पाणिनि के अनेक सूत्रों का इन्होंने उदाहरण प्रस्तुत किया है; जैसे—शास् और दर्शयते का द्विकर्मक प्रयोग '**अनुजीविसात्कृत**', '**स्तनोपपीडम्**' तथा दो निषेधों का विध्यर्थक प्रयोग '**ननिवृत्तम्**' में न के साथ समास इत्यादि।

आख्यानपरक लकारों के प्रयोग में भारवि की अत्यधिक सावधानी अत्यन्त रोचक है, जिनके विषय में कालिदास व अन्य कवियों ने उदासीनता दिखायी है। ध्यातव्य है कि भारवि ने लङ् और लुङ् लकारों का आख्यानपरक प्रयोग नहीं किया है। ये दोनों लकार वक्ता के अपरोक्ष अनुभव के सम्बन्ध में ही प्रयुक्त हुए हैं। महाकवि माघ के 272 प्रयोगों की तुलना में भारवि ने इनके केवल 10 प्रयोग किये हैं। लिट् के अर्थ देने वाले लट् लकार के **आह** और **वेद** को छोड़कर आख्यान् में सर्वत्र लिट् लकार का प्रयोग किया है। भूतकाल में लट् लकार के साथ स्म का आख्यान-परक प्रयोग भी प्रचुरता से मिलता है।

छन्दों के प्रयोग के विषय में महाकवि भारवि उतने ही बढ़े-चढ़े हैं, जितने कि अलंकारों के प्रयोग के विषय में। जहाँ तक प्राकृतिक-वर्णन का प्रश्न है। महाकवि प्राकृतिक चित्रण में अत्यन्त प्रवीण हैं। सायंकाल को गायें गोचरभूमि से लौटी हुई चली आ रही हैं। उनके थन दूध से भर गये हैं, अतः वे धीरे-धीरे चल रहीं हैं। उन्हें अपने प्यारे बछड़ों की याद आ रही है। उनके मोटे थनों से दूध टपक रहा है—

"*उपारताः पश्चिमरात्रगोचरा- ;*
दपारयन्तः पतितुं जवेन गाम् ।
तमुत्सुकाश्चक्रुरवेक्षणोत्सुकं ;
गवां गणाः प्रस्नुतपीवरौधसः ॥"

गायों को चराने वाले बेचारे ग्वाले भी गायों के ही समान सरलता की मूर्ति हैं। ये गोपाल पशुओं के साथ भाई जैसा प्रेम करते हैं। घर के समान वन से भी प्रेम करते हैं। ये इतने सीधे हैं कि गायें उनका अनुकरण करती हुई दिखायी देती हैं—